समुद्र का राजा सी लॉयन

जैसे जंगल का राजा शेर होता है, वैसे ही समुद्र का राजा भी शेर होता है। पढ़कर अजीब तो नहीं लग रहा है ना? अगर सी लॉयन के बारे में नहीं जानते हो तो अब जान लो सरिता कुमारी से

इसके कान बाहर की तरफ होते हैं। अपने पंजों से यह चलता है। अपने शरीर को यह किसी भी तरह मोड़ लेता है, चाहे धरती हो या समुद्र। धरती पर यह अपने फर का इस्तेमाल चलने के लिये और पानी में तैरने के लिये करता है। ये देखने में छोटे और सिल्की मोटे बाल वाले होते हैं। देखने में ये चिकने होते हैं। चलने के लिये ये फ्लेप्स और पैरों का उपयोग करते हैं। सील, सी लॉयन्स और वॉल्रस ये सभी एक ही प्रजाति के होते हैं। ये अटलांटिक महासागर के उत्तरी इलाके में पाये जाते हैं। इनकी उम्र 20 से 30 साल की होती है।

स्टीलर सी लॉयन, जो इस प्रजाति के सबसे बड़े जीव हैं, इनका वजन लगभग 1,000 किलो और लंबाई 10 फीट की होती है, जबकि कैलिफोर्नियाई मेल सी लॉयन्स का वजन 300 किलो और लंबाई 8 फीट के आसपास होती है। इनकी खास बात यह है कि यह खाने के शौकीन होते हैं, इसलिये ये अपने वजन से भी ज्यादा खाना एक बार में ही खा जाते हैं।

स्टीलर सी लॉयन्स बड़े-बड़े पत्थरों पर पड़े हुए देखे जा सकते हैं। ये सील की ही प्रजाति के होते हैं, जो दिखाई भी उन्हीं की तरह देते हैं। ये समूह में रहना पसंद करते है। ये वे स्तनधारी जीव हैं, जो पानी के साथ जमीन पर भी रह सकते हैं। इन्हें रेस्पबेरी आइसलैंड में पत्थरों के ऊपर पड़े हुए देखा जा सकता है। इनके समूह को ओटरीने कहा जाता है। सील और सी लॉयन को देखकर कहा नहीं जा सकता कि दोनों अलग हैं। ये लगभग एक जैसे ही लगते हैं। सामान्यतया सी लॉयन प्रजाति के ज्यादातर स्तनधारी देखने में एक जैसे ही होते हैं।

कुछ पागलपन भी करते हैं ये...

सन् 2007 में पश्चिमी आस्ट्रेलिया में एक सी लॉयन ने 13 साल की एक लड़की की स्पीड बोट पर हमला कर दिया था, जैसे-तैसे उस लड़की को बचा लिया गया। आस्ट्रेलियाई बायोलॉजिस्ट्स ने जब इस घटना के बारे में अध्ययन किया तो चौंकाने वाला सच सामने आया कि सी लॉयन ने उस लड़की को एक खिलौना समझा था और उसके साथ खेलना चाहता था। मेल सी लॉयन्स ज्यादा आत्मघाती होते हैं फीमेल्स की तुलना में।

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

एक और आश्चर्य की बात तुम्हें बताते हैं कि जहां एक तरफ इन्हें लोग अपने मनोरंजन के लिये इस्तेमाल करते हैं, वही पेरू के पुरानी पीढ़ी के लोग इनकी और समुद्र के जानवरों की पूजा करते है।

सी लॉयन्स ठंडे पानी में ही रहना पसंद करते हैं। अपना ज्यादा समय ये पानी के भीतर खाना ढूंढ़नें में बिताते हैं। अगर तुम्हें समझ में न आये कि सील और सी लॉयन में क्या अंतर है, तो तुरंत दोनों के कानों को देखना।

सी लॉयन्स के सिर के पास छोटे से कान होते हैं, जिन्हें वे पानी में अपनी आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल करते हैं, जिससे कानों में पानी न जा सके।

अगर तुम सी लॉयन को देखना चाहते हो तो पेसिफिक ओशियन के तटों पर इन्हें रेंगते हुए देख सकते हो। इनकी सुनने और सूंघने की शक्ति तो गजब की है। पानी के भीतर भी ये बिना किसी रुकावट के देख और सुन

मुंह से सुनने वाला मेंढक

दुनिया का सबसे छोटा जीव है गार्डनियर ट्री फ्रॉग। इसे सेशल्स फ्रॉग के नाम से भी जाना जाता है। यह हरे और भूरे रंग का होता है। यह सेशल्स के द्वीप में पाया जाता है और इसकी अधिकतम लंबाई मात्र 1 सेंटीमीटर ही होती है।

कैसे सुनता है ये...

अन्य जानवरों में जहां हम कान देख सकते हैं, वहीं इसमें कान दिखता ही नहीं। हालांकि अन्य जीव ईयरड्रम से आवाज को सुनते हैं, बिल्कुल मनुष्यों की तरह। होता यह है कि ईयरड्रम पर आवाज की गर्मी यानी साउंड हीट से वाइब्रेशन होता है, जिसे इनर ईयर तक भेजा जाता है, जहां वो इलेकिरटक सिग्नल में बदलता है और तब दिमाग उसे समझता है।

लेकिन इस नन्हे से मेंढक के साथ ऐसा नहीं होता। हालांकि यह भी अपने साथियों के साथ टर्रा सकता है और उनकी आवाज सुन भी सकता है। लेकिन इसके पास न तो ईयर ड्रम है और न ही मिडल ईयर। तब सवाल यह है कि यह सुनता कैसे है..?

कहीं जादू तो नहीं...

फ्रेंच नेशनल सेंटर फॉर साइंटिफिक रिसर्च और विश्वविद्यालयों के शोधकर्ताओं ने मिलकर इस पर शोध शुरू किया। उन्होंने जंगल में स्पीकर लगा दिये, जहां ये मेंढक रहते थे। साथ ही इसमें वही आवाजें चला दीं, जो वे साधारणतया बोलते थे और यह देखना शुरू किया कि उनका रिएक्शन कैसा होता है। आश्चर्य की बात कि वे उसी स्पीकर के पास मंडराने लगे ताकि रिएक्ट कर सकें अपने साथी की आवाज पर।

इस रहस्य के तह तक जाने के लिए नन्हे मेंढकों का वैज्ञानिकों ने एक्सरे किया। लेकिन ज्यादा पता नहीं लग सका, क्योंकि उनका पल्मोनरी सिस्टम ज्यादा विकसित नहीं था और इतने से बस यह पता चल पाया कि उनका फेफड़ा सुनने में कोई मदद नहीं करता। इसके बाद शोधकर्ताओं ने अपना ध्यान उसके छोटे से सिर की ओर लगाया और बहुत सारे प्रयोगों के बाद पता लगाया कि इनके कान का काम भी इनका मुंह ही करता है। वैज्ञानिकों के अनुसार, आवाज की लहरें मुंह के रास्ते से ही जाती थीं, जहां उपस्थित विभिन्न हड्डियों से टकराकर वह इनर ईयर में पहुंचने के बाद दिमाग में पहुंचती थी।

ऐसे ही हैं और कई जानवर कछुओं में एक प्रजाति होती है, जो फेफड़ों के बिना सांस लेती है। आइस फिश तो ऐसी है, जिसमें हीमोग्लोबिन होता ही नहीं और एक बिना कान का कछुआ, जो अच्छी तरह सुन सकता है। है न अचरज की बात।

सिलसिला प्रोजेक्टर फोन का

सैमसंग गैलेक्सी बीम और स्पाइस पॉपकॉर्न एम 9000 के नाम सुने हैं आपने? ये ऐसे फोन हैं, जिनमें वीडियो, प्रेजेंटेशंस आदि के लिए इस्तेमाल होने वाला प्रोजेक्टर समाहित किया गया था। इन दोनों स्मार्टफोन्स में एक आकर्षक फीचर के रूप में ऐसा ही एक प्रोजेक्टर जोडम गया था, हालांकि इनमें इस्तेमाल किए गए प्रोजेक्टर की कुछ सीमाएं थीं। अब आइबॉल ने एंडी 4ए के रूप में एक दमदार स्मार्टफोन जारी किया है, जिसमें एक अच्छा-खासा प्रोजेक्टर शामिल है। गैलेक्सी बीम का प्रोजेक्टर 15 ल्यूमेन्स का था, इसलिए उसकी प्रोजेक्शन क्षमता सीमित थी। अब पैंतीस ल्यूमेन्स का आईबॉल प्रोजेक्टर फोन चित्रों को आठ फुट दूर की दीवार पर दस गुणा आठ फुट के आकार में प्रोजेक्ट कर सकता है। 1200:1 के दमदार कन्ट्रास्ट रेश्यो वाले इस फोन के जरिए आप प्रोफेशनल दुनिया में प्रेजेंटेशन दे सकें, यह तो व्यावहारिक नहीं लगता, लेकिन अचानक किसी बैठक के दौरान प्रेजेंटेशन या वीडियोज के डिस्प्ले के लिए यह बुरा विकल्प नहीं है। इसमें चार जीबी इंटरनल मेमरी उपलब्ध है, जिसे माइक्रो कार्ड के जरिए बढ़ा कर 32 जीबी तक ले जा सकते हैं। एंड्रॉयड 4.1 जेली बीन ऑपरेटिंग सिस्टम और 3जी से लैस एंडी 4ए के साथ आने वाला ट्राइपोड (स्टैंड) प्रोजेक्शन की प्रक्रिया को आसान बनाता है। प्रोजेक्शन मोड में इसकी बैटरी दो घंटे चलती है।

करीब सत्रह हजार रुपए में मिलने वाला आईबॉल एंडी 4ए कामयाब हुआ तो और भी कंपनियां प्रोजेक्टर फोन बनाने के लिए प्रेरित होंगी। सैमसंग, स्पाइस, वॉक्स, इन्टेक्स, माइक्रोमैक्स आदि पहले ही प्रोजेक्टर फोन ला चुकी हैं।

6 मंजिल ऊंचा गिटार!

गिटार लोग हाथ में पकड़कर बजाते हैं। यह हैंडी होता है और इसका वजन 2 किलो या इससे भी कम होता है। अभी हाल ही में कनाडा के क्रैप ब्रिटाने में विश्व के सबसे ऊंचे गिटार की कलाकृति बनाई गई है। इस कलाकृति की ऊंचाई करीब 6 मंजिल इमारत के बराबर है, जो 57 फीट ऊंची है। इसका कुल वजन 8 टन है। यह कई किलोमीटर दूर से दिखती है। इसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। यह कलाकृति शहर की पहचान बन चुकी है।